पाठ – 14

नाचा के पुरखा : दाऊ मंदरा जी

–लेखक मंडल

ये पाठ म नाचा के महान कलाकार दुलार सिंह साव दाऊ मंदराजी के संक्षिप्त जीवन परिचय दे गेहे। ओ मन कलाकारी ले अपन अउ अपन गाँव, प्रदेश के नाँव उँच करिन। नाचा ल नवा रूप–रंग दे म मंदराजी अलगेच काम करिन, जेकर से नाचा के रूप बदलगे। दाऊ मंदराजी म संगठन क्षमता खूबेच रहिस हे। ओ हो मन नाचा के कलाकार मन ल एक संगठन म जोड़े के उदिम करिन। छत्तीसगढ़ के कला ल जग म उजागर करे बर जेमन अपन सरबर फूँक देइन, ओमा पहली नाव दाऊ दुलार सिंह मंदाराजी के हे।

लोकनाट्य ह ओतकेच जुन्ना आय जतके मनखे के जिनगी। लोक कलाकार मन जइसन सपना देखथें अउ ओला सही असन करे के उदिम करथें, उही ह लोकनाट्य कहाथे। 'नाचा' ह छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनाट्य आवय। नाचा के सरलता, सहजता ह ओकर सुघरइ आय अउ ओकर प्रभाव के कारन ह इही म लुकाय हे।

नाचा देखइया मन मोहित हो जाथें अउ रातभर अपन जघा ले टस–ले–मस नइ होवँय। नाचा म जेन लोक–जीवन के महक,लोकहित के भाव अउ लोक संस्कृति के अधार हवय, ओही एकर आत्मा आय। नाचा के कोनो लिखित म बोली–भाखा (संवाद) नइ होवय। नाचा के कलाकार मन अपन हाजिरजवाबी म हाँसी–मजाक के बात ल त बोलथेंच, फेर एमा मनखे के सुभाव अउ समाज के कुरीति के बरनन घलो रहिथे। इही विशेषता ह देखइया मन ल रातभर बाँध के राखे रहिथे।

कहे जाथे के छत्तीसगढ़ के नाट्य परंपरा ह संसार के सब ले जुन्ना नाट्य परंपरा आय। रामगढ़ के पहाड़ी के रंगशाला ल सबले जुन्ना रंगशाला माने जाथे।

नाचा में पहिली खड़े साज के चलन रहिस। फेर कोनो नाचा दल (पार्टी) संगठित नइ रहिस। नाचा के कलाकार मन ल सकेल के दाऊ मंदराजी ह एक ठन नाचा दल बनाइस 'रवेली रिंगनी साज'। इही ह छत्तीसगढ़ के पहिली नाचा पार्टी आय।

नाचा बर अपन तन–मन–धन ल अर्पित करइया दुलार सिंह साव 'मंदरा जी' के जनम 1 अप्रैल सन् 1911 म राजनाँदगाँव ले 7 कि.मी. दूरिहा गाँव रवेली के मालगुजार परिवार म होय रहिस। ईंकर पिताजी के नाव दाऊ रामाधीन अउ माता जी के नाव रेवती बाई रहिस। ईंकर प्राथमिक शिक्षा कन्हारपुरी म पूरा होइस।

मंदरा जी दाऊ ह नानपन ले गाना–बजाना म धियान धरे रहिस। गाँव के कलाकार मन के संगत म रहिके तबला–चिकारा बजाय बर सिखिन। ओ समय म हरमुनिया(हारमोनियम) ल कोनो जानत नइ रहिन।

दाई–ददा मन के इच्छा रहिस के बेटा ह पढ़–लिख के मालगुजारी ल सँभाल लय,फेर बालक मंदरा जी के मन म नाचा अइसे रमिस के ओला नाचा छोड़ कुछू नइ भाइस। दाई–ददा ल ये सब थोरको पसंद नइ रहिस। एकरे सेती 14 साल के बालपन म मंदराजी के बिहाव कर देइन। फेर ओकर मूँड़ म तो नाचा के धुन सवार राहय,वो ह कहाँ बँधातिस घर–गृहस्थी म। निसदिन ओकर मन म नाचा के बोली–बात अउ गीत ह घुमरत राहय।

दुलारसिंह साव ले मंदराजी बने के एक ठन किस्सा हे। बचपन म बड़े जन पेट वाला,मोठ–डाँट लइका ह अँगना म खेलत राहय। उही अँगना के तुलसी चँवरा म एक ठन पेटला मूर्ति माड़े राहय। नना–बबा मन ह इही ल देख के दुलारसिंह ल मदरासी कहि दिन। काकी अउ भउजी मन ल घलो इही नाव भा गे। इही मदरासी ह आगू चलके मंदरा जी होगे।

मंदरा जी के मन नाचा म तो रमे राहय,फेर समाज के कइ ठन कुरीति अउ अँगरेजी राज के गुलामी ह घलो उँकर मन ल कचोटे। ओ मन छत्तीसगढ़ ल जगाना चाहत रहिन। छत्तीसगढ़ी समाज ल जगाये बर ओला नाचा ले बढ़िया उचित साधन अउ का मिलतिस। मंदराजी ह अब नाचा ल अपन मन माफिक रूप दे म भिड़गें।

मंदरा जी दाऊ मन सन् 1927–28 म नाचा के नामी कलाकार मन ल जोरे के काम शुरू कर दिन। गुंडरदेही (खल्लारी) के नारद निर्मलकर(परी),लोहारा भर्रीटोला के सुकलू ठाकुर(गम्मतिहा,जोकर),खेरथा अछोली के नोहर दास(गम्मतिहा,जोकर), कन्हारपुरी राजनाँदगाँव के रहइया रामगुलाल निर्मलकर (तबलची) अउ खुद मंदराजी दाऊ (चिकरहा),ये पाँचों कलाकार मिल के पहिली छत्तीसगढ़ी नाचा दल 'रवेली नाचा पार्टी' के अधार बनिन।

मंदरा जी दाऊ मन सन् 1930 म कलकत्ता ले हारमोनियम बिसा के लाइन। नाचा म पहिली बेर चिकारा के जघा म हारमोनियम बजाइन। खड़े साज नाचा ह मसाल के अँजोर म होवय। कलाकार मन ब्रम्हानंद अउ कबीर के निरगुनिया भजन आँवर–भाँवर घूम–घूम के गावँय।

ओ मन नाचा के रूप ल बदलिन। निरगुनिया भजन के जघा ''भाई रे तैं छुवा ल काबर डरे'' अउ ''तोला जोगी जानेव रे भाई'' जइसन सुग्घर–सुग्घर गीत ल शामिल करिन। नाचा अब मंच म होय लगिस,मंच उपर चँदोवा तनगे। बजकरी कलाकार मन बाजबट(तख्त)उपर बइठे लगिन। मसाल के जघा पेट्रोमेक्स (गैसबत्ती) आगे। छुही,गेरू,कोइला अउ हरताल के जघा स्नो,पावडर आगे। नवाँ–नवाँ गम्मत बनाय गिस। नाचा के समय घलो बदल दे गिस। अब रात के दस बजे ले बिहनिया के होवत ले नाचा होय लगिस।

तीर–तकार अउ दूरिहा–दूरिहा ले लइका सियान गाड़ी–गाड़ा म नाचा देखे बर जावँय। मंदरा जी अउ नाचा अब एक–दूसर के साथी बनगें। रवेली नाचा पार्टी के कार्यक्रम 1950–51 म रायपुर म होइस। डेढ़ महीना ले रोज नाचा होइस। रवेली नाचा पार्टी के कलाकार मन अतेक सुग्घर गम्मत देखावँय के शहर के जम्मो सिनेमाघर(टॉकीज) के खेल बंद होगे।

मंदरा जी ह नाचा अउ कलाकार मन बर अपन तन–मन–धन सबो ल खुवार कर दिस। नाचा के ओखी म समाज म अँजोर बगराय खातिर अपन मालगुजारी ल होम कर दिस। जिनगी के आखरी समय म उँखर तीर हारमोनियम के छोड़ कुछू नइ रहिस। 24 सितंबर 1984 म मंदराजी ह ये दुनिया ल छोड़ के स्वर्गवासी होगें।

हमर बड़े पुरखा मन अपन पीछू जेन चीज छोड़ के जाथें, ओकर ले समाज ह कई जुग तक ले अँजोर म चमकत रहिथे। उँकर करम–कमई के ममहई ह जन–जन के मन म बसे रहिथे।

मंदरा जी कहे रिहिन– "हमन गम्मत देखा के समाजिक कुरीति ल उजागर करेन। 'पोंगवा पंडित' गम्मत म छुवाछूत ल दूरिहा करे के कोसिस करेन। 'इरानी' गम्मत म हिन्दू–मुसलमान एकता समाज के आघू लायेन। 'मोर नाव दमाद अउ गाँव के नाव ससुरार' गम्मत म बाल–बिहाव ल रोके के कोसिस करेन।'मरारिन' गम्मत म देवर–भउजी के नता ल दाई–बेटा के रूप म देखायेन। अजादी के खातिर लड़ई चलत रहिस। हमर नाचा पार्टी ह घलो बीर–सेनानी मन के संग दिस। हमर गीत अउ गम्मत देश–प्रेम के भाव ले जुड़े रहय। अजादी के बात हमर गीत अउ गम्मत म रहय। एकरे सेती हमर नाचा म अँगरेजी सरकार ह रोक घलो लगाय रहिस।"

आज नाचा कलाकार मन के बीच म मंदराजी के बड़ सम्मान हे। उँकर जनम स्थान रवेली म हर साल 1 अप्रैल के छत्तीसगढ़ के छोटे–बड़े कलाकार मन सकलाथें अउ उँकर सुरता करथें।

छत्तीसगढ़ शासन ह घलो नाचा के पुरखा मंदराजी के सम्मान म हर साल कलाकार मन ल दू लाख रुपिया के इनाम देथे।

शब्दार्थ :– **पुरखा**–पूर्वज, **ओतकेच**–उतना ही, **लुकाय** – छिपाना, **सकेल**– इकट्ठा, **नानपन**–बचपन, **सिखिन** – सीखना, **थोरको** – थोड़ा भी **मननाफिक** – मन के अनुसार, **बिसाके** – खरीदकर, **जोगी** – योगी, ऋषि, **अतेक** – इतना, **खुवार** –नष्ट, **आधू** – आगे।

अभ्यास

पाठ से

1. लोकनाट्य ल कतेक जुन्ना माने गेहे?
2. लोगन मन नाचा से काबर परभावित होथे?
3. नाचा के आत्मा काला कहे गेहे?
4. नाचा देखइया मन ल नाचा के कोन से विशेषता रातभर बाँधे रहिथे?
5. दाऊ मंदरा जी ह नाचा के गम्मत में समाज के कोन–कोन से कुरीति ल उजागर करत रहिसे?
6. नाचा म पहिली चिकारा के जघा म कोन जिनिस के प्रयोग करय?
7. दाऊ मंदरा जी के मन काबर कचोटत रहिसे?
8. अंगरेजी सरकार ह नाचा पार्टी ल कोन कारण से बंद करवा देइस?

पाठ से आगे

1. तुमन ल कभू–कभू नाटक या प्रहसन देखे के अवसर मिले होही अऊ कोनो प्रहसन अऊ गम्मत के कोनो पात्र ल देखके तुँहर मन म कोनो भाव ह अच्छा लगिस होही। उन भाव ल अपन शब्द म लिखव।

2. ''भाई रे तै छुवा ल काबर डरे'' गीत ल नाचा म शामिल करे के पाछू म का सोच रहिस होही? विचार करके लिखव।

3. हमर पुरखा मन अपन पाछू कोन से जिनिस छोड़ के जाथे, जेकर कारण समाज ह कई युग तक ले अंजोर रहिथे।

भाषा से

1. खाल्हे दे वाक्य ल घलो पढ़व अऊ समझव

मंदरा जी नाचत रहिन।

इहां 'मंदरा जी' कर्ता अऊ नाचत ' कर्म हवय।

''जौन शब्द ले कोनो कारज के करे के बात होथे ओला क्रिया कहिथे।

भेद – (1) सकर्मक (2) अकर्मक

सकर्मक – जौन वाक्य में कर्त्ता अउ कर्म दूनो होथे वोला सकर्मक क्रिया कहिथे।

जैसे – मोहन पुस्तक पढ़थे। मोहन का पढ़थे? उत्तर– पुस्तक

अकर्मक क्रिया– जौन क्रिया में अर्थ ल स्पष्ट करे बर कर्म के आवश्यकता नई होए, वोला अकर्मक क्रिया कहिथे। जैसे– मै खाथव? का खाथव– नई पता लेकिन 'कौन' लगा के पूछे ले कर्त्ता के पता चलथे। अब खाल्हे देवाय सकर्मक क्रिया वाले वाक्य मन ल अकर्मक क्रिया वाले वाक्य में बदलव।

1. मैं स्कूल जाथव 2. मैं पुस्तक देखथव 3. मैं खेल खेलथंव 4. मैं गॉव जात हॅव।

2. पाठ म 'पार्टी' अउ 'पेट्रोमेक्स' जइसन शब्द मन लिखाय हवय जेन ह विदेशी शब्द आय।

'अइसने दूसर देश के भाषा के शब्द जेला हिन्दी म अऊ छत्तीसगढ़ी म शामिल कर ले गेहे वोला विदेशी शब्द कहिथें। पाठ म आये अइसने विदेशी शब्द ल छाँट के लिखव।

3. खाल्हे लिखाये शब्द मन के हिन्दी म उल्टा शब्द लिखव–

नवा, दिन, अपन

4. खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखव –

संगवारी, जिनगी, मनखे, बेटा, प्रेम, तन

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ में कई ठन नाचा पार्टी हवय। ऊँखर बारे म पता लगावव अऊ सूची बनावव।

2. पाठ के कोनो नाटक ल गम्मत बनाके स्कूल म अभिनय करव।

3. ''खड़े साज के नाचा'' के बारे म घलो शिक्षक के सहायता से जानकारी लिखव।

●●●